

दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अग्रिम अध्ययन एवं प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कक्षा दसवीं तक सी.बी.एस.ई. एवं राज्य बोर्ड (आर.बी.एस.ई.) के पाठ्यक्रम में कुछ हद तक समानता है जिसमें सामान्यतया गणित, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन एवं तृतीय भाषा अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाए जाते हैं इसलिए 10वीं कक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए महत्वपूर्ण होने के साथ उसके विद्यार्थी जीवन का भी बड़ा पड़ाव है।

दूसरी ओर दसवीं कक्षा ग्रुप डी की लगभग सभी भर्तियों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता भी है इसलिए रोजगार तथा उच्च अध्ययन दोनों ही दृष्टिकोण से यह कक्षा महत्वपूर्ण है इसमें विद्यार्थी भी पूर्ण मनोयोग से मेहनत करके अधिकाधिक अंक प्रतिशत अर्जित करने के लिए मेहनत करते हैं।

राजस्थान में लगभग सन् 2000 से पहले 10वीं कक्षा को प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करना एक बड़ी उपलब्धि होती थी लेकिन वर्तमान में विद्यार्थी पहले की तुलना में अधिक प्रतिशत अंक ला रहे हैं जो अच्छी बात है। पहले तो सामान्यतया प्रथम श्रेणी में दसवीं उत्तीर्ण करने वाले या आर्थिक रूप से संपन्न परिवार वाले छात्र ही विज्ञान वर्ग में प्रवेश लेते थे अन्यथा अन्य सभी छात्रों का कला वर्ग ही सर्व सुलभ आसान संकाय होता था। इस वर्ग के चयन में ना कोई मार्गदर्शन की जरूरत पड़ती थी एवं ना ही माता-पिता या विद्यार्थी को कुछ सोचना पड़ता था। नजदीकी उच्च माध्यमिक विद्यालय में उपलब्ध ऐच्छिक विषय ही उसे पढ़ने पड़ते थे। कई बार ऐच्छिक विषय समूह के कारण मनचाहे विषय भी नहीं मिलते थे।

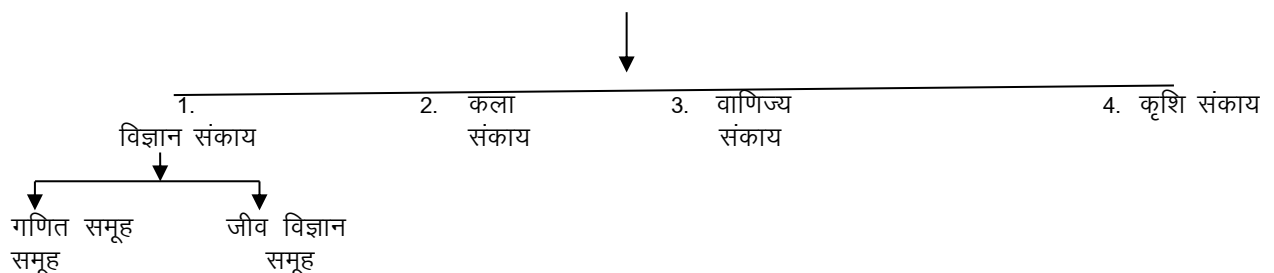
वर्तमान में परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आज प्रत्येक अभिभावक, माता-पिता या विद्यार्थी के समक्ष दसवीं के बाद अनेक विकल्प मौजूद हैं। चाहे उच्च अध्ययन करने की बात हो या कोई व्यावसायिक डिप्लोमा करना हो। दसवीं के बाद उच्च अध्ययन के अवसरों का अध्ययन करके आप अपने कैरियर को उज्ज्वल बनाने वाले तथा आपके लिए सर्वाधिक उपर्युक्त विकल्प का चुनाव कर सकते हैं। यह भी सच है कि ग्रामीण क्षेत्र में आज भी विद्यार्थी या अभिभावक के समक्ष ज्यादा विकल्प नहीं हैं। दसवीं के बाद ग्रामीण मुख्यालय पर मौजूद उच्च माध्यमिक विद्यालय में सामान्यतया कला वर्ग के विषयों के साथ 12वीं तक अध्ययन करने का विकल्प सबसे सहज, सस्ता एवं वहनीय होता है जिसे अधिकतर विद्यार्थी व अभिभावक अपनाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में उपलब्ध अनेक विकल्पों के बारे में जानकारी दिया जाना उचित होगा ताकि ग्रामीण एवं शहरी प्रतिभाएँ अवसर का लाभ उठा सकें। 10वीं उत्तीर्ण विद्यार्थी के समक्ष उच्च अध्ययन हेतु सामान्यतः तीन विकल्प होते हैं—

- (1) अपनी पसंद के संकाय में सीनियर सैकण्डरी कक्षा में प्रवेश।
- (2) इंजीनियरिंग एवं गैर इंजीनियरिंग क्षेत्र में डिप्लोमा कोर्स।
- (3) आईटीआई में डिप्लोमा कोर्स।

5.1 अपनी पसंद के संकाय में सीनियर सैकण्डरी कक्षा में प्रवेश

10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अधिकतर विद्यार्थी सीनियर सैकण्डरी (10+2) कक्षा में प्रवेश लेते हैं। 10वीं कक्षा उत्तीर्ण ऐसे विद्यार्थियों के समक्ष उपलब्ध विभिन्न संकाय के विकल्प का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

10वीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी के लिए विकल्प



5.1.1 विज्ञान संकाय

10वीं कक्षा के बाद जो विद्यार्थी भविष्य में चिकित्सक, इंजीनियर, प्रशासक, वैज्ञानिक आदि बनने की चाह रखते हैं या इंजीनियरिंग, मेडीकल, अंतरिक्ष, सेना, प्रशासन आदि क्षेत्रों में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं या जिनके माता-पिता या अभिभावक अपने बालकों को इस क्षेत्र में भेजना चाहते हैं उनके लिये विज्ञान संकाय बेहतर विकल्प है। विज्ञान संकाय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के सामने दो विकल्प गणित समूह एवं जीव विज्ञान समूह के विषय होते हैं जैसे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, बायोटेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर विज्ञान आदि ऐच्छिक विषय हैं।

- विद्यार्थी को भौतिक एवं रसायन विज्ञान को अनिवार्य रूप से चयन करना होता है जबकि तीसरे विषय के रूप में जीव विज्ञान या गणित या कम्प्यूटर विज्ञान का चयन करना होता है यद्यपि सीबीएसई बोर्ड द्वारा छात्रों को भौतिक, रसायन विज्ञान के साथ जीव विज्ञान एवं गणित दोनों विषयों में भी परीक्षा देने का विकल्प दिया जाता है। सामान्यतः मेडिकल क्षेत्र में चाहे चिकित्सा विज्ञान में डिग्री लेनी हो या पैरा मेडिकल क्षेत्र के कोर्स करने हो तो जीव विज्ञान (जीव विज्ञान समूह) विषय को ऐच्छिक विषय के रूप में लेना चाहिये। वहीं इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर विज्ञान, अंतरिक्ष, नौसेना, जल सेना या अन्य तकनीकी क्षेत्र में नौकरी, शिक्षण शोध, सरकारी या गैर सरकारी कम्पनियों में सेवाएँ देनी हो तो गणित समूह के साथ ही 12वीं की परीक्षा देनी चाहिए। गणित समूह को PCM (Physics, Chemistry, Maths), जीव विज्ञान समूह को PCB (Physics, Chemistry, Biology) एवं समेकित विषय समूह को सामान्यतः बोलचाल में PCMB कहते हैं।
- विज्ञान संकाय के विषयों के साथ 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थी के लिये यह सकारात्मक पक्ष है कि वह 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद कृषि, कला, कानून, प्रबंधन, मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि किसी भी क्षेत्र में स्नातक डिग्री कोर्स हेतु प्रवेश ले सकता है लेकिन कला वर्ग के विद्यार्थी कृषि, मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि में स्नातक डिग्री कोर्स नहीं कर सकते हैं।

5.1.2 कला संकाय

10वीं के बाद अधिकतर विद्यार्थी कला वर्ग में 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करते हैं। इसमें रा.मा.शि. बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा दो अनिवार्य विषय तथा राजनीति विज्ञान, इतिहास, भूगोल, हिन्दी साहित्य, संस्कृत, राजस्थानी, लोक प्रशासन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि सहित कई विषय ऐच्छिक होते हैं जिनमें से कोई तीन ऐच्छिक विषयों का चयन करना होता है। कला वर्ग का विद्यार्थी मेडिकल, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी आदि विशिष्ट सेवा में अपना कैरियर नहीं बना सकता है लेकिन प्रशासन, शिक्षण शोध, समाज सेवा, पत्रकारिता, विधिक सेवा, साहित्य, कला आदि क्षेत्र में अपना कैरियर बना सकते हैं। कला वर्ग को केवल औसत दर्जे के विद्यार्थियों का संकाय मानना अनुचित होगा, क्योंकि कला संकाय में भी आजकल दसवीं में उत्कृष्ट अंक लाने वाले विद्यार्थी भी प्रवेश ले रहे हैं। इस संकाय के विद्यार्थी के लिये कैरियर निर्माण हेतु अन्य वर्गों से भी अधिक विकल्प मौजूद होते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में कला व मानविकी वर्ग के विषयों का पाठ्यक्रम अधिक समाहित होता है इसलिए इस दृष्टिकोण से इस संकाय के विद्यार्थी लाभ में रहते हैं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी नजरिये से भी यह संकाय ज्यादा उपयोगी रहता है।

5.1.3 वाणिज्य संकाय

10वीं के बाद विद्यार्थी तीसरे विकल्प वाणिज्य संकाय में भी 12वीं कक्षा उत्तीर्ण कर सकते हैं। विशेषकर जो विद्यार्थी लेखांकन, अंकेक्षण (ऑडिटिंग), कर व्यवस्था, शेयर मार्केट, वित्त या बैंकिंग, मानव संसाधन प्रबंधन, प्रबंधन, बीमा, मार्केटिंग, सी.ए., कम्पनी सचिव, वित्तीय निवेश के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं या अपना व्यापार या व्यवसाय करने के इच्छुक हैं या जो विद्यार्थी बीबीए, बीएमएस, बीबीए, सीए जैसे पाठ्यक्रम के साथ स्नातक डिग्री करना चाहते हैं उनको इस संकाय में प्रवेश लेना चाहिए।

- इसमें भी अनिवार्य विषयों (हिन्दी, अंग्रेजी या सीबीएसई के अनुसार अन्य विषय) के अलावा लेखांकन, व्यवसाय अध्ययन, अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी, अंकेक्षण (ऑडिटिंग) बिजनेस लॉ आदि विषयों का चयन करना पड़ता है।

5.1.4 कृषि संकाय : कृषि में 12वीं के बाद स्नातक डिग्री या स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करके अपने कैरियर को बेहतर बना सकते हैं। कृषि क्षेत्र वर्तमान में बहुत ही उभरता हुआ बेहतरीन कैरियर वाला संकाय है इसलिये विद्यार्थियों को 10वीं के बाद कृषि संकाय का चयन कर इसमें प्रवेश लेना चाहिए। कृषि संकाय में कृषि विज्ञान, कृषि जीव विज्ञान, जीव विज्ञान, कृषि रसायन, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान आदि ऐच्छिक विषयों का अध्ययन किया जाता है।

5.1.5 व्यावसायिक संकाय : कक्षा 9वीं से 12वीं तक कई विद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम (Vocational Courses) करवाये जाते हैं ताकि विद्यार्थी इन कोर्स को उत्तीर्ण कर अपना कैरियर उस कोर्स में बना सके। आज के समय में रोजगार आधारित ऐसे कोर्स की भी बहुत जरूरत है।

राजस्थान में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम (RSLDC) एवं मा. शि. बोर्ड अजमेर के संयुक्त प्रयास से व्यावसायिक शिक्षा योजना शुरू की गई जो 905 विद्यालयों में 12 व्यवसायों के साथ संचालित है।

व्यावसायिक शिक्षा योजना के विषय (व्यवसाय)– रिटेल, ऑटोमोबाईल सिक्युरिटी, आईटी या आईटीईएस, हैल्थकैयर ब्यूटी एंड वेलनेस, ट्रेवल एवं टूरिजम, इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स, माइक्रो इरिगेशन टेक्निशियन, होम फर्निशिंग, पलम्बर, टेलिकॉम आदि।

शिक्षण प्रशिक्षण– प्रत्येक चयनित विद्यालय में किन्हीं दो विषयों का संचालन किया जा सकेगा। कक्षा 9वीं (लेवल-1) एवं 10वीं (लेवल-2) में उपर्युक्त में से कोई एक विषय का चयन कर विद्यार्थी 7वें विषय के रूप तथा कक्षा 11वीं (लेवल-3) एवं कक्षा 12वीं (लेवल-4) में किसी एक विषय का चयन तीसरे या चौथे वैकल्पिक विषय के रूप में कर सकेगा। विद्यार्थियों को विद्यालय में विषयों का शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदाताओं द्वारा उपलब्ध कराये गए व्यावसायिक प्रशिक्षकों (VTs) द्वारा सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं, औद्योगिक भ्रमण, ऑन जॉब ट्रेनिंग आदि तरीकों से करवाया जाएगा। वर्तमान में व्यावसायिक पृथक संकाय नहीं होकर इसका अन्य संकाय के साथ अध्ययन करवाया जा रहा है।

5.1.6 10वीं कक्षा के बाद संकाय एवं विषय का चयन में ध्यातव्य बिन्दु–

1. प्रत्येक संकाय का अपना अलग-अलग महत्त्व होता है। किसी भी संकाय को बेहतर या कमतर आंकना उचित नहीं होता है। इस स्तर पर लिया गया निर्णय बहुत दूरगामी प्रभाव डालता है इसलिए संकाय एवं विषय चयन में देखा देखी एवं जल्दबाजी के बजाय व्यापक चर्चा, विचार विमर्श, बालक की रुचि, योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप फायदेमंद विकल्प का चयन किया जाना चाहिये क्योंकि भविष्य में उच्च अध्ययन के निर्णयों का आधार 10वीं के बाद 10+2 में चयन किये गये संकाय एवं विषय होते हैं। अपनी क्षमताओं एवं कौशल का पूर्ण विश्लेषण कर अपनी ताकत एवं कमजोरियों को समझे और फिर संकाय एवं विषयों का चयन करें। 10वीं के बाद ऐसे संकाय या विषयों का चयन कर लेते हैं जिसमें विद्यार्थी की ज्यादा रुचि नहीं होती है पढ़ाई में मन नहीं लगता है। वह अनुत्तीर्ण हो जाता है या बहुत कम अंकों से उत्तीर्ण होता है फिर पूर्व में लिए गए निर्णय के सम्बंध में पछताना पड़ता है।
अभिभावक बच्चों की रुचि, दक्षता एवं क्षमता का मूल्यांकन करने के बाद संकाय एवं विषय का चयन करें ताकि विद्यार्थी के परिश्रम एवं समय का पूर्णरूपेण सार्थक उपयोग हो सके। विद्यार्थियों के निर्णय से पूर्व आत्म विश्लेषण करने के साथ पिछली कक्षाओं में किए गए अध्ययन के दौरान कार्य विश्लेषण पर भी ध्यान देना चाहिए।
2. संकाय एवं विषय चयन से पूर्व अभिभावकों को दसवीं कक्षा तक बच्चे को अध्ययन करवाने वाले शिक्षकों एवं कतिपय सहपाठियों से भी चर्चा करनी चाहिए क्योंकि कई बार बच्चा अपनी रुचियाँ एवं अपने मन की बात अभिभावकों को न बताकर सहपाठी या शिक्षक को बताता है। शिक्षक अभिभावक एवं बालक दोनों को अच्छा मार्गदर्शन दे सकते हैं कि विद्यार्थी की क्षमता के मुताबिक क्या संकाय एवं विषय उचित रहेगा। दोस्त या बड़े भाई बहिन, पड़ोसी, जानकार आदि ने जिस संकाय एवं विषय का चयन किया है उसके कारण को जाने बिना उसका अनुसरण करते हुए संकाय एवं विषय का चयन नहीं करना चाहिए इसलिए माता-पिता एवं अभिभावक का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों की 10वीं परीक्षा में गणित, विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन विषय में आये अंकों के आधार पर उसे 11 वीं कक्षा में कला, विज्ञान (जीव विज्ञान/गणित), वाणिज्य आदि संकाय में प्रवेश दिलाने के बजाय बच्चे की रुचि एवं उसके मंतव्य के बारे में जानकारी प्राप्त करें। उसके बाद थोड़ा सोच समझकर बच्चे को विश्वास में लेकर उससे चर्चा करते हुए उसकी राय को ध्यान में रखते हुए निर्णय करें।
3. माता-पिता या अभिभावक अपना निर्णय बच्चे पर नहीं थोपे कि उसे मेडिकल या इंजीनियरिंग, प्रशासन में ही जाना है जैसे उसे जीव विज्ञान लेकर डॉक्टर ही बनता है। चाहे 12वीं के बाद NEET की तीन चार साल तैयारी करनी पड़े। दूसरी और कतिपय अभिभावक गणित विषय के साथ 11वीं विज्ञान में प्रवेश दिलाकर JEE के लिये बच्चे की रुचि नहीं होने के बावजूद तैयारी करवाते हैं एवं बच्चा चयनित नहीं होने पर कभी-कभी डिप्रेशन में आ जाता है इसलिये बच्चे की रुचि, उसकी योग्यता तथा उस संकाय में बच्चे का भविष्य आदि का ध्यान रखते हुये संकाय एवं विषयों का चयन किया जाना चाहिये। दबाव में लेकर या दबाव देकर या दबाव में आकर या देखा देखी में संकाय चयन का निर्णय नहीं किया जाना चाहिए। जो विषय बच्चे को पसंद हो जिस विषय में बालक अच्छे हों, जिस विषय में मन लगाकर पढ़ सकते हैं तथा जिस विषय में उसकी दिलचस्पी है उसी संकाय एवं विषय का चयन कर आगे की उच्च शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।
4. विज्ञान, कला, वाणिज्य आदि संकाय चयन करने के बाद संकायवार ऐच्छिक विषय चयन में भी सावधानी बरतनी चाहिये। ग्रामीण क्षेत्रों में तो कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग में अधिकतर विद्यालयों में तीन चार ऐच्छिक विषय उपलब्ध रहते हैं इसलिये विद्यार्थी के पास कम विकल्प रहते हैं। जिसके कारण उसको उन्हीं विषयों में 12वीं तक अध्ययन करना पड़ता

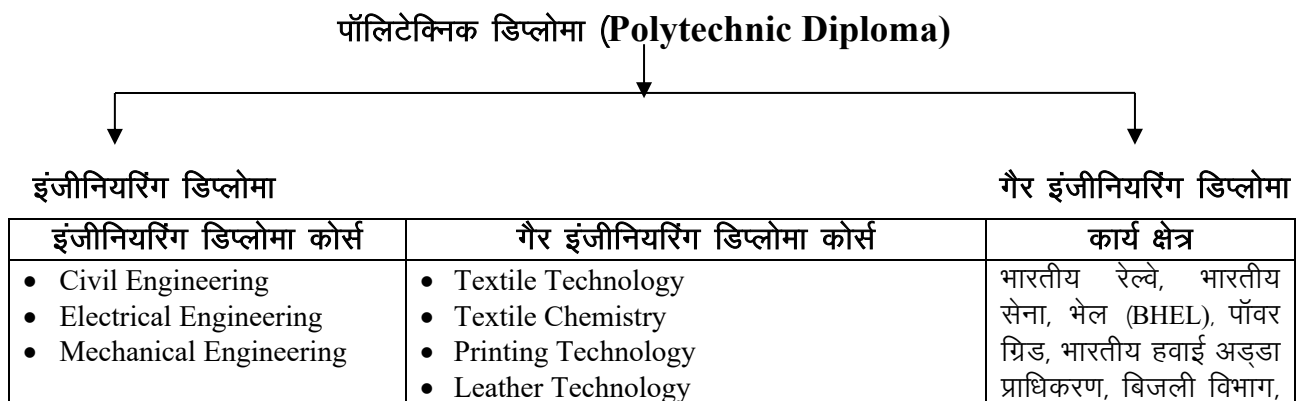
है। किसी विद्यार्थी की कृषि विज्ञान पढ़ने की रुचि है लेकिन कक्षा 10वीं के अध्ययनरत विद्यालय में कृषि विज्ञान विषय नहीं होने के कारण मजबूरी में विज्ञान संकाय या कला संकाय में उस विद्यालय में मौजूद अन्य विषय का अध्ययन करना पड़ता है जिसमें विद्यार्थी की कम रुचि होती है। अतः इस सम्बंध में अभिभावकों को विनम्र राय है कि अगर वह सक्षम है तो रुचि के विषय के अध्ययन की सुविधा हो वहाँ पर ही बच्चे का प्रवेश दिलवाया जाकर अग्रिम अध्ययन करवाया जाना चाहिए।

5. कई विद्यार्थियों के अभिभावक 12वीं में अधिक अंक लाने के लिये ऐसे संकाय एवं विषय का चयन करवाते हैं या जिस विषय का पाठ्यक्रम आसान एवं कम हो या जिसमें मेहनत कम करनी पड़ती हो या जिसमें प्रायोगिक परीक्षा होने से अधिक अंक आते हैं उन विषयों का चयन करते हैं जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए। संकाय का चुनाव अपने भावी लक्ष्य, जीवन में उपयोगिता, कैरियर निर्माण, नौकरी या व्यवसाय का चुनाव करने, एक अच्छा नागरिक बनाने सहित व्यक्तित्व विकास में उनके योगदान को ध्यान में रखते हुये करना चाहिए।
6. 10वीं के बाद संकाय एवं विषय के साथ-साथ उस संस्था या विद्यालय में आयोजित होने वाली सह शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ उस संस्था या विद्यालय में कार्यरत स्टाफ का भी बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः जिस संस्था एवं विद्यालय में नियमित अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु एनसीसी, स्काउटिंग, एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) स्टूडेंट पुलिस कैडेट, इन्डोर एवं आउटडोर खेल, नियमित योगा व्यायाम, सांस्कृतिक गतिविधियाँ (नृत्य, गायन वाद्य यंत्र, भाषण आदि) लेखन, चित्रकला, कम्प्यूटर शिक्षा, व्यवसायिक डिप्लोमा, पुस्तकालय सहित बहु आयामी गतिविधियों में से अधिकतम गतिविधियाँ संचालित हो रही हो, उन विद्यालयों में बच्चों को रुचि के संकाय में प्रवेश दिलाया जाना उचित रहता है।

5.2 इंजीनियरिंग एवं गैर इंजीनियरिंग क्षेत्र में पॉलिटेक्निक डिप्लोमा कोर्स

10वीं के बाद विज्ञान, कला या वाणिज्य संकाय से 10+2 उत्तीर्ण करने के बाद विद्यार्थियों के समक्ष पॉलिटेक्निक डिप्लोमा या आईटीआई करने का विकल्प भी मौजूद रहता है। कई विद्यालय, संस्थान, कॉलेज आदि वॉकेशनल कोर्स (Vocational Courses) चलाते हैं। वहीं कई कॉलेजों में पॉलिटेक्निक डिप्लोमा कोर्स (Polytechnic Courses) होते हैं जो सामान्यतः 3 वर्षीय नियमित कोर्स होते हैं। यह कोर्स राजकीय कॉलेज के साथ प्राइवेट कॉलेजों में भी संचालित होते हैं। इन कोर्स में सामान्यतः इंजीनियरिंग एवं गैर इंजीनियरिंग के विषय शामिल होते हैं। इन डिप्लोमा को करने के बाद विद्यार्थी जहां कई प्रकार के सरकारी विभाग एवं प्राइवेट कम्पनियों में रोजगार पा सकते हैं, वहीं आगे अध्ययन करने के लिये उसी में लेटरल एंट्री के तहत बी.टेक या बी.ई. डिग्री कोर्स भी कर सकते हैं।

- (A) इस कोर्स में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ प्रैक्टिकल नॉलेज (Practical Knowledge) पर ज्यादा जोर देने से सम्बंधित तकनीकी विषय में कुशल विद्यार्थी की प्राइवेट कम्पनियों में भी आसानी से नियुक्ति हो जाती है। कुछ पॉलिटेक्निक संस्थाएँ केवल महिलाओं के लिये डिप्लोमा कोर्स संचालित करती हैं। पॉलिटेक्निक डिप्लोमा सामान्यतः इंजीनियरिंग एवं गैर इंजीनियरिंग दो प्रकार का होता है।



<ul style="list-style-type: none"> • Computer Science & Engineering • Chemical Engineering • Dairy Engineering • Glass and Ceralnic Engineering • Agriculture Engineering • Information Technology Engineering • Electronics Communication Engineering • Aeronotical Engineering 	<ul style="list-style-type: none"> • Interior Decoration & Design • Fashion Designing & Garment Technology • Paint Technology • Plastic and Mould Technology • Textile Design • Air Craft Maintenance • Library and Infomation Science • Home Science • Material Management • Mass Communication • Pharmacey (12th Pass) • Diploma in Hotel & Catering (12th Pass) • Diploma in Tourism Managment (12th Pass) 	गेल (GAIL), ऑएनजीसी (ONGC), रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन, एनटीपीसी (NTPC), सार्वजनिक निर्माण कार्य विभाग, भारत संचार निगम लिमिटेड, सिंचाई विभाग, नेशनल हाई वे (NHAI), राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन, राज्य सरकार के विभिन्न विभाग एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियों में रोजगार के अवसर।
--	---	---

(B) प्रवेश प्रक्रिया : पॉलिटेक्निक कोर्स हेतु राजस्थान की लगभग 134 कॉलेज में 30000 से अधिक विद्यार्थियों की प्रवेश प्रक्रिया राजस्थान तकनीकी शिक्षा बोर्ड जोधपुर द्वारा संपन्न की जाती हैं।

1. **आवेदन प्रक्रिया** :- राजस्थान तकनीकी शिक्षा की वेबसाइट www.hte.rajasthan.gov.in पर प्रति वर्ष मई माह में ऑनलाईन आवेदन प्राप्त किए जाते हैं।
2. **पात्रता** :- आवेदक आर.बी.एस.ई. या किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से न्यूनतम 35 प्रतिशत अंकों के साथ विज्ञान एवं गणित विषय सहित उत्तीर्ण होना चाहिए।
नोट:-लेटरल एन्ट्री बी.टेक करने के लिए पॉलिटेक्निक करने के बाद बी. टेक की इलेक्ट्रिकल ब्रांच में सीधा द्वितीय वर्ष में प्रवेश लेकर बी. टेक डिग्री कर सकते हैं जिसमें आयु सीमा की बाध्यता नहीं है।
3. **चयन प्रक्रिया** :- 10वीं या समकक्ष परीक्षा के अंकों के आधार पर मेरिट से इंजीनियरिंग व नॉन इंजीनियरिंग डिप्लोमा कोर्स हेतु प्रवेश दिया जाता है।
4. **कोर्स की अवधि** - 3 वर्ष

5.3 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) में डिप्लोमा कोर्स

10वीं के बाद विद्यार्थियों के समक्ष आई.टी.आई. डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश लेने का भी एक अच्छा विकल्प होता है। रेल्वे के ग्रुप डी, पैरामिलिट्री फोर्स (CAPF), सेना, केन्द्र एवं राज्य सरकार के अधीन विभागों में अनेक पदों के लिये न्यूनतम योग्यता में 10वीं कक्षा के साथ सम्बंधित ट्रेड में आई.टी.आई. डिप्लोमा अतिरिक्त एवं अनिवार्य पात्रता की शर्त होती है इसलिये विशेष ट्रेडसमेन के लिए आवेदन के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिये आई.टी.आई. उपयुक्त विकल्प है। वहीं जो अभिभावक बच्चों से 10वीं के बाद रोजगार लगने की अपेक्षा रखते हैं या जो विद्यार्थी स्वयं का रोजगार भुरु करना चाहते हैं उन्हें आई.टी.आई. की अपनी पसंदीदा ट्रेड में डिप्लोमा करके ना केवल स्वयं के पैरों पर खड़ा होना चाहिए बल्कि और भी बेरोजगारों को रोजगार देने की हैसियत हासिल करनी चाहिए।

- A. **औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई.टी.आई.)** :- ये संस्थान विद्यार्थी को विभिन्न ट्रेड्स में कौशल (Skill) आधारित सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक (Practical) प्रशिक्षण देते हैं जिसे पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी सम्बन्धित ट्रेड में पारंगत हो जाता है। ये कोर्स राजकीय संस्थान के अलावा प्राईवेट संस्थान से भी होते हैं जिनमें सम्बन्धित ट्रेड में प्रशिक्षण हेतु सम्पूर्ण आधारभूत संरचना एवं उपकरण होते हैं जिनसे कारपेंटर, फिटर, इलेक्ट्रिशियन, वेल्डर आदि के लिये प्रशिक्षण दिया जाता है।

आई.टी.आई. के पाठ्यक्रम

ये पाठ्यक्रम ट्रेड के अनुसार 6 माह से लेकर अधिकतम दो वर्ष तक के हो सकते हैं।

आई.टी.आई. डिप्लोमा ट्रेड	कार्य क्षेत्र
इलेक्ट्रिशियन, इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक, इन्स्ट्रूमेंट मैकेनिक, मैकेनिस्ट ग्राइन्डर, मैकेनिक मोटर व्हीकल, मैकेनिक फ्रीज एवं ए.सी., मैकेनिक रेडियों एवं टी.वी., डाफ्टमेन सिविल, डाफ्टमेन मैकेनिकल, फिटर, वायरलैस	कारपेंटर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग असिस्टेंट, फाउन्डरी मैन, मैकेनिक टेक्टर, प्लम्बर (नल फिटिंग), स्टेनोग्राफी (अंग्रेजी), स्टेनोग्राफी (हिन्दी), सलाई, वेल्डर
	राज्य एवं केन्द्र सरकार के अधीन सरकारी विभाग (जल संसाधन विभाग, विद्युत विभाग, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सैना, पैरा मिलिट्री फोर्स, रेलवे, राज्य पुलिस) नौकरी, निजी कम्पनियों में विभिन्न ट्रेड्स में आई.टी.आई. डिप्लोमाधारी के लिए विभिन्न अवसर या स्वयं का व्यवसाय।

B. प्रवेश हेतु पात्रता :

1. **आयु सीमा** :—14 वर्ष से अधिक एवं 40 वर्ष से कम आयु होनी चाहिए जबकि महिला, विधवा महिला सहित आरक्षित वर्ग को नियमानुसार अधिकतम आयु में छूट दी जाती है।
2. **शैक्षिक योग्यता** :—कक्षा 8वीं, 10वीं और 12वीं, उत्तीर्ण हो जो योग्यता ट्रेड के अनुसार निर्धारित है।
3. **प्रवेश प्रक्रिया** :—राजकीय आई.टी.आई में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन लिए जाकर मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है एवं निजी संस्थान में सीधे ही संस्थान प्रबंधन द्वारा प्रवेश दिया जाता है।

यारी करनी चाहिए।